

## डॉ. डेव मैथ्यूसन, हेर्मेनेयुटिक्स, व्याख्यान 3, पाठ आलोचना

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

पिछले सत्र में हमने धर्मग्रंथ की उत्पत्ति और उत्पादन के बारे में थोड़ी बात की, मुख्य रूप से उस पर चर्चा की जिसे हम और धर्मशास्त्री प्रेरणा कहते हैं, और हमने कई ग्रंथों को देखा जो धर्मग्रंथ के चरित्र का वर्णन और खुलासा करते हैं, यह अपने बारे में क्या कहता है, और धर्मग्रंथ की घटना की घटना, और हम प्रेरित बाइबिल की समझ तैयार करने के लिए इसे एक साथ कैसे रखते हैं। मुझे जो बेहतर विवरण मिले उनमें से एक आई. हॉवर्ड मार्शल से आया है, जहां वे कहते हैं, मानवीय स्तर पर हम इसकी रचना का वर्णन कर सकते हैं, जो कि बाइबिल की रचना है, इसके पीछे मौजूद विभिन्न मौखिक और साहित्यिक प्रक्रियाओं के संदर्भ में। . गवाहों से जानकारी का संग्रह, लिखित स्रोतों का उपयोग, ऐसी जानकारी को लिखना और संपादित करना, सहज पत्रों की रचना, भविष्यसूचक संदेशों को लिखने के लिए प्रतिबद्ध होना, विभिन्न दस्तावेजों को एक साथ एकत्र करना, इत्यादि।

हालाँकि, उसी समय, दैवीय स्तर पर, हम यह दावा कर सकते हैं कि आत्मा जो सृष्टि के जल के ऊपर, उत्पत्ति 1-2 में चलती थी, पूरी प्रक्रिया में सक्रिय थी, ताकि बाइबिल को दोनों के रूप में माना जा सके मनुष्य या मनुष्य के शब्द और परमेश्वर का वचन। आत्मा की इस गतिविधि को मानवीय गतिविधियों के साथ सहवर्ती के रूप में वर्णित किया जा सकता है जिसके माध्यम से बाइबिल लिखी गई थी। तो इस समझ के अनुसार, पिछले सत्र के दौरान हमारी चर्चा में, हमने सुझाव दिया कि बाइबिल, जबकि परमेश्वर का वचन, एक ही समय में उत्पादन की बहुत ही मानवीय प्रक्रियाओं को प्रकट करती है, लेकिन इसमें परमेश्वर की आत्मा इस तरह काम कर रही थी, कि उत्पाद, अंतिम उत्पाद, परमेश्वर के वचन से कम नहीं है।

और हमने कहा कि हेर्मेनेयुटिक्स और व्याख्या के लिए इसकी एक शाखा यह है कि जिन विभिन्न तरीकों और आलोचनाओं पर हम आज चर्चा करना शुरू करेंगे, और यहां तक कि हेर्मेनेयुटिक्स में विभिन्न ऐतिहासिक व्यक्तियों के विभिन्न योगदानों का अध्ययन और व्याख्या की हमारी समझ भी सभी हैं महत्वपूर्ण है क्योंकि बाइबिल किसी मानवीय दस्तावेज़ से कम नहीं है। लेकिन यह

निश्चित रूप से उससे कहीं अधिक है। परमेश्वर के वचन के रूप में, यह सिर्फ एक मानवीय कार्य से कहीं अधिक है।

इसका हमारे जीवन में दावा है। यह आधिकारिक है। प्रेरणा के परिणामों में से एक वह शब्द है जिस पर हमने चर्चा नहीं की है, और मैं किसी भी विवरण में जाने का इरादा नहीं रखता, वह है अचूकता।

यह मुख्यतः निगमनात्मक तर्क है। यदि बाइबल ईश्वर का वचन है, और यदि ईश्वर सच्चा है और झूठ नहीं बोलता है, तो इसका मतलब यह है कि उस उत्पाद, धर्मग्रंथ में त्रुटियां नहीं हैं, धोखा नहीं है, आदि। इसलिए हमने उत्पत्ति के बारे में थोड़ी बात की धर्मग्रंथ, लेकिन मैं अब धर्मग्रंथ के प्रसारण के बारे में और अधिक बात करना चाहता हूँ।

अर्थात्, हम कैसे जानें कि जो बाइबल हमारे पास है वह वास्तव में वही दर्शाती है जो ईश्वर ने मूल रूप से प्रेरणा की प्रक्रिया के माध्यम से प्रकट किया था? हम कैसे जानते हैं कि मानव लेखकों ने वास्तव में पवित्र आत्मा की प्रेरणा के तहत क्या दर्ज किया है? हम कैसे जानते हैं कि नए और पुराने नियम का पाठ, जिस तक हममें से अधिकांश लोगों की पहुँच अनुवाद के माध्यम से है, हालाँकि यदि आप ग्रीक और हिब्रू जानते हैं, तो आज हम जिस बारे में बात करने जा रहे हैं वह तुरंत उससे संबंधित है। लेकिन हम कैसे जानते हैं कि जो बाइबल हमारे पास है वह सटीक रूप से दर्शाती है कि मानव लेखकों ने क्या लिखा था और पवित्रशास्त्र के प्रेरित पाठ में ईश्वर क्या कहना चाहता था? ट्रांसमिशन का पहला चरण, वास्तव में दो चरण हैं जो हमारे लिए प्रासंगिक हैं। उनमें से एक जिसके बारे में हम अगले सत्र में बात करेंगे, अनुवाद है जो बताता है कि कैसे हमारी अपनी भाषा के माध्यम से पुराने और नए नियम तक पहुँच है।

जब हमने पिछले सत्रों में से एक में देखा कि व्याख्या में आने वाली बाधाओं में से एक या दूरियों में से एक यह है कि पुराने और नए नियम बहुत अलग-अलग भाषाओं में लिखे गए हैं। हमारे और मूल पाठ के बीच एक भाषाई दूरी है। अनुवाद हमें अपनी भाषा में पुराने और नए नियम तक पहुँचने की अनुमति देता है।

तो हम उस बारे में बात करेंगे. लेकिन जिस मुद्दे पर मैं आज संक्षेप में चर्चा करना चाहता हूँ, वह ऐसा मुद्दा है जिसमें हममें से अधिकांश लोग आवश्यक रूप से भाग नहीं लेंगे या संलग्न होंगे, लेकिन वह जो व्याख्याशास्त्र के लिए प्रासंगिक है, क्योंकि कुछ अर्थों में यह व्याख्याशास्त्र का प्रारंभिक चरण है क्योंकि यह नींव से संबंधित है धर्मग्रंथ या स्वयं पाठ का। हमें कैसे पता चलेगा कि जो पाठ हमारे पास है वह व्याख्याशास्त्र और व्याख्या के लिए पर्याप्त आधार और सटीक आधार है? और उसे पाठ आलोचना के रूप में जाना जाता है।

इसलिए मेरा मुख्य उद्देश्य आपको पाठ समीक्षक बनाना नहीं है, हालाँकि आप में से कुछ लोग ऐसा करना चुन सकते हैं, क्योंकि जैसा कि हम देखेंगे पाठ आलोचना एक बहुत ही विशिष्ट क्षेत्र है। और इसलिए मुख्य रूप से मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि पाठ आलोचना क्या है, ताकि आप तर्कों का पालन कर सकें और आप इसके बारे में चर्चाओं का अनुसरण कर सकें, लेकिन यह भी कि आप पुराने और नए नियम के पाठ के लिए अधिक सराहना करेंगे। आपके पास। आपके हाथ में जो बाइबिल है, वह एक लंबी और कठिन यात्रा का परिणाम है, जो विभिन्न विद्वानों द्वारा की गई है, जिन्होंने आपके पास मौजूद धर्मग्रंथों को प्रदान करने के लिए कड़ी मेहनत की है, जिनकी आप व्याख्या करते हैं और पढ़ते हैं।

और इसलिए मैं पाठ आलोचना नामक इस चीज़ के बारे में थोड़ी बात करना चाहता हूँ। पाठ आलोचना क्या है, फिर से, यह पवित्रशास्त्र के प्रसारण से संबंधित है, जो प्रेरणा से शुरू होता है, तथ्य यह है कि पुराने नए नियम ने भगवान के प्रेरित शब्द होने का दावा किया है, लेकिन तथ्य यह है कि हमारे पास कोई भी मूल पांडुलिपि नहीं है, हमारे पास नहीं है हमारे पास वह मूल दस्तावेज़ नहीं है जो भविष्यवक्ता यशायाह ने लिखा था, या हमारे पास वह मूल दस्तावेज़ नहीं है जिसे पॉल ने लिखा या मैथ्यू ने लिखा, या रूथ या 1 और 2 सैमुअल के लेखक ने लिखा। हमारे पास मूल दस्तावेज़ नहीं हैं।

इसके बजाय, हमारे पास जो कुछ है वह उसकी प्रतियां हैं, वास्तव में अधिक शाब्दिक रूप से, कभी-कभी मूल पाठ की प्रतियों की प्रतियां होती हैं। शायद इसकी कल्पना करने का एक तरीका

यह है कि पाठ्य आलोचना कुछ हद तक एक पेड़ की तरह है। पेड़ का तना मूल पाठ होगा, शायद, जिस तक हमारी पहुँच नहीं है, और सभी शाखाएँ जो अलग-अलग दिशाओं में जाती हैं और जिनमें स्वयं कोंपलें और शाखाएँ होती हैं।

वे पांडुलिपियाँ और प्रतियाँ होंगी जो परिणामी होंगी, और अक्सर हम केवल शाखाओं के शीर्षों और किनारों और सिरों तक ही पहुँच पाते हैं जो काफी दूरी पर होते हैं, हालाँकि अभिन्न रूप से पेड़ के तने से संबंधित होते हैं। तो पाठ्य आलोचना के साथ, क्योंकि हमारे पास मूल पांडुलिपियाँ नहीं हैं, लेकिन हमारे पास केवल प्रतियाँ हैं, कभी-कभी फिर से, आमतौर पर यह प्रतियों की प्रतियों की प्रतियाँ होती हैं, अक्सर कभी-कभी कई सौ साल अलग हो जाती हैं, हालाँकि नए नियम में कभी-कभी साक्ष्य थोड़ा सा होता है थोड़ा करीब, लेकिन अक्सर पांडुलिपियों को मूल पांडुलिपियों से अस्थायी रूप से अलग कर दिया जाता है, पाठ्य आलोचना जो करती है वह वास्तव में उलटा काम करती है। इसने यह समझने की कोशिश में पीछे की ओर काम किया कि हम मूल पांडुलिपियों से अब जो हमारे पास है, वह कैसे प्राप्त हुए? और सभी सबूतों के आधार पर, यह पीछे की ओर काम करने और यथासंभव सटीक और पर्याप्त रूप से पुनर्प्राप्त करने का प्रयास है कि मूल पांडुलिपियाँ कैसी दिखती होंगी।

इसलिए पीछे की ओर काम करके, और हम इस प्रक्रिया को थोड़ा सा समझाएंगे, हमारे पास मौजूद सभी साक्ष्यों और सभी पांडुलिपियों से पीछे की ओर काम करके, पीछे की ओर काम करके, यह यथासंभव बारीकी से पुनर्निर्माण करने का एक प्रयास है जो मूल लेखक की सबसे अधिक संभावना है। लिखा होगा. क्योंकि याद रखें, हमारे पास मूल पांडुलिपि नहीं है। हमारे पास बस प्रतियों की प्रतियाँ हैं, और हमारे पास उनमें से काफी कुछ है, विशेष रूप से नए नियम के संबंध में।

धारणा यह है कि मूल पांडुलिपि से शुरू होने वाली मूल प्रतिलिपि की प्रक्रिया में, और उन्हें अधिक उपलब्ध कराने के लिए प्रतिलिपि बनाने और प्रतियाँ बनाने की प्रक्रिया में, धारणा यह है कि पांडुलिपि में कुछ परिवर्तन, कुछ त्रुटियाँ, कुछ अंतर आ गए थे।, पांडुलिपियों की प्रतिलिपि बनाई गई थी, और इसलिए जो हमारे पास है वह पांडुलिपियों का एक समूह है जो कभी-कभी

कुछ स्थानों पर एक दूसरे से भिन्न होते हैं। और उस सब के आधार पर, क्योंकि सभी पांडुलिपियों में मतभेद हैं, फिर से, हमें वापस काम करने की कोशिश करनी होगी और पूछना होगा कि ये मतभेद कैसे उत्पन्न हुए? और क्या हम यह पता लगा सकते हैं कि उन सभी साक्ष्यों में से कौन सा पाठन, क्या हम यह पता लगा सकते हैं कि उनमें से कौन सा संभवतः पॉल का इरादा था? सभी पांडुलिपियों में यह धारणा है कि कहीं न कहीं, प्रत्येक शब्द, प्रत्येक वाक्य, प्रत्येक कविता के साथ, कहीं न कहीं मूल पाठ है जिसे पॉल ने लिखा है, या यशायाह ने, या जिसने भी। और इसलिए पाठ आलोचना यथासंभव सटीक पाठ स्थापित करने का प्रयास करती है।

पाठ समीक्षक अक्सर कहते हैं कि यह विज्ञान और कला दोनों है। ऐसे निश्चित सिद्धांत हैं जो हमें पाठ पर वापस लौटने में मदद करते हैं, लेकिन यह एक कला भी है। यह एक ऐसी रेसिपी की तरह नहीं है जहाँ आप बस सभी सामग्रियाँ मिलाते हैं, और आपका अंतिम समय का उत्पाद होता है।

इसमें बहुत रचनात्मक सोच की आवश्यकता होती है, और यह एक कला के साथ-साथ एक विज्ञान भी है। पांडुलिपियों की प्रतिलिपि बनाने की प्रक्रिया, जैसा कि स्पष्ट है कि पहले हमारे पास एक प्रिंटिंग प्रेस थी, या अब हमारे पास कंप्यूटर और प्रिंटर हैं, और आप वस्तुतः किसी भी चीज़ की सटीकता के साथ कई प्रतियाँ आसानी से प्रिंट कर सकते हैं। उस समय, जाहिर तौर पर जिस तरह से वे कई प्रतियाँ तैयार कर सकते थे या सार्वजनिक उपभोग के लिए प्रतियाँ तैयार कर सकते थे वह मानव नकल ही था।

वह एक व्यक्ति है जो सदियों से लिखने के लिए एक स्कॉल और जो भी उपकरण इस्तेमाल करता था, उसके साथ बैठा है, और हाथ से किसी पाठ की प्रतिलिपि बनाने की श्रमसाध्य प्रक्रिया से गुजर रहा है। और अक्सर क्या होता है, और वैसे, मुझे अपने वक्तव्य की प्रस्तावना करने की आवश्यकता होती है, मेरी अधिकांश टिप्पणियाँ फिर से मेरी विशेषज्ञता के क्षेत्र को दर्शाती हैं, और वह नया नियम है। दरअसल, पुराने और नए टेस्टामेंट, दोनों का पाठ्य आलोचना के प्रति दृष्टिकोण थोड़ा अलग है क्योंकि वे विभिन्न प्रकार के साक्ष्यों के साथ काम कर रहे हैं।

और वास्तव में हम देखेंगे कि साक्ष्य की मात्रा के मामले में नया टेस्टामेंट संभवतः किसी भी अन्य दस्तावेज़ की तुलना में ऐतिहासिक रूप से अधिक प्रमाणित है। जैसा कि हम देखेंगे, नए नियम के पाठ के लगभग 6,000 विभिन्न पांडुलिपि गवाह हैं। हम इसके बारे में बाद में थोड़ी बात करेंगे।

आमतौर पर जो होता है, विशेषकर नए नियम में, वह कुछ चीजें हैं। नंबर एक, यदि कोई लेखक किसी पाठ की नकल कर रहा है, तो क्या होगा कि लेखक के बगल में एक पाठ या पांडुलिपि होगी, मान लीजिए, मार्क का सुसमाचार, और उसकी शीट या उसकी पपीरी शीट या जो कुछ भी वह इसकी नकल कर रहा था पर, उनकी लेखन सामग्री। और क्या होगा, प्रक्रिया यह है कि लेखक शब्दों के एक समूह या शायद पाठ की एक पंक्ति को पढ़ेगा और फिर उसे अपने दिमाग में रखना होगा और फिर अपनी आंखों को उससे हटाकर अपनी पांडुलिपि की ओर ले जाना होगा और जो उसने अभी पढ़ा है उसे याद रखना होगा। यह लिखना।

अब आप आगे और पीछे जाने की इस प्रक्रिया को देख सकते हैं, कई चीजें घटित हो सकती हैं, जैसा कि हम बस एक क्षण में देखेंगे। एक लेखक भूल सकता है कि उसने क्या लिखा है, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि यदि आपने कभी इस तरह लिखने की कोशिश की है और जो कुछ आप पढ़ रहे हैं उसे कॉपी करके हाथ से कॉपी करने की कोशिश की है, तो कभी-कभी आप गलतियाँ करेंगे। आप एक शब्द जोड़ सकते हैं, हो सकता है कि आप एक शब्द चूक जाएं, और हम एक क्षण में देखेंगे कि अन्य चीजें भी हो सकती हैं।

लेकिन मुद्दा यह है कि, जब एक लेखक उस तरीके से नकल कर रहा है, एक पांडुलिपि से, जिस तक उसकी पहुंच है, उस लेखन बर्तन तक जिसे वह अब रिकॉर्ड कर रहा है, अलग-अलग चीजें हो सकती हैं, अलग-अलग त्रुटियाँ या अलग-अलग जब वह नकल कर रहा होता है तो वास्तव में अंतर प्रकट हो सकता है। आपने यह कथन सुना है कि ग़लती करना मानवीय है, और पांडुलिपियों की प्रतिलिपि बनाने में यह निश्चित रूप से सच है। दूसरी बात जो अक्सर होती है, नए नियम की पांडुलिपियों का बड़े पैमाने पर उत्पादन करने का एक तरीका यह होगा कि कोई व्यक्ति मेरी तरह खड़ा हो और पांडुलिपि से पढ़े, जहां आपके पास कई लेखक हैं जो वास्तव में जो पढ़ा जा रहा है उसकी नकल कर रहे हैं।

अब स्पष्ट रूप से, लेखक, पढ़ने वाला व्यक्ति कैसे कुछ उच्चारण करता है या कुछ कहता है, या हो सकता है कि इसे पढ़ने वाला व्यक्ति स्पष्ट रूप से कुछ उच्चारण न कर सके या गलती से कोई शब्द चूक जाए, यह सब तब प्रतिबिंबित होगा जब पांडुलिपियों की नकल की जाएगी। तो आप इन प्रक्रियाओं के माध्यम से देख सकते हैं, बहुत ही मानवीय प्रक्रियाओं, हाथ से और नए नियम की पांडुलिपियों को देखकर, कुछ अंतर और कुछ त्रुटियां आ सकती हैं। अब एक सवाल है कि हम इस पर ज्यादा समय नहीं बिताएंगे, क्योंकि मुझे लगता है कि यह किसी का भी अनुमान है, कोई भी स्पष्ट रूप से पूछ सकता है, भगवान क्यों अनुमति देगा, वह अपने शब्द को प्रेरित क्यों करेगा और फिर कुछ त्रुटियों या कुछ मतभेदों को कॉपी करने की मानवीय प्रक्रिया के माध्यम से अनुमति देगा? मुझे यकीन नहीं है कि ऐसा क्यों है।

कई संभावित स्पष्टीकरण हैं, लेकिन मुझे लगता है कि यह कोई भी अनुमान लगा सकता है कि भगवान नकल करने की मानवीय प्रक्रिया की अनुमति क्यों देंगे। लेकिन ऐसा कहने के बाद, विद्वान पाठ्य आलोचना की प्रक्रिया के माध्यम से बहुत उच्च स्तर और उच्च स्तर के आत्मविश्वास के बारे में सोचते हैं, उन्होंने वास्तव में वही पुनर्प्राप्त और पुनर्स्थापित किया है जो मूल लेखकों ने संप्रेषित किया है। और फिर भी, अधिकांश पाठ्य सामग्री में, विशेष रूप से नए नियम में, जो परिवर्तन किए गए हैं उनमें से अधिकांश अप्रासंगिक हैं।

उनमें से अधिकांश पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा है। ताकि हम बहुत आश्वस्त हो सकें कि हमारे पास जो कुछ है वह पुराने नियम के लेखकों के नए नियम के लेखकों द्वारा लिखी गई बातों का सटीक और विश्वसनीय प्रतिबिंब है। मुझे पाठ्य आलोचना से संबंधित कुछ टिप्पणियाँ देने दीजिए।

और फिर, मेरी अधिकांश टिप्पणियाँ नए नियम की ओर लक्षित हैं। सबसे पहले, हम पहले ही नए नियम के बारे में उल्लेख कर चुके हैं कि जब नए नियम के पाठ की बात आती है तो धन की शर्मिंदगी या साक्ष्य की शर्मिंदगी होती है। एक विद्वान ने कहा कि जब विभिन्न नए नियम की पांडुलिपियों की बात आती है तो सामग्री का दमनकारी अधिशेष होता है।

और हमने कहा कि पांडुलिपि के लगभग 6,000 विभिन्न टुकड़े हैं। अब, यह कहा जाए, कि उनमें से सभी एक जैसे नहीं हैं। कभी-कभी आपके पास कुछ पांडुलिपियाँ होती हैं जिनमें वस्तुतः संपूर्ण नया नियम होता है।

अन्य समय में, आपके पास पांडुलिपियाँ होती हैं जिनमें केवल एक पुस्तक या कुछ पुस्तकें होंगी। और कभी-कभी उनके पास पूरी किताब नहीं होती। हमारे पास भी टुकड़े हैं।

उदाहरण के लिए, कुछ शुरुआती लोग जॉन के एक अध्याय के टुकड़े या जॉन के एक अध्याय के हिस्से मात्र हैं। इसलिए पांडुलिपि साक्ष्य अपनी संपूर्णता, अपने चरित्र, अपनी गुणवत्ता के संदर्भ में बहुत विविध है। लेकिन मुद्दा यह है कि अमीरी के साथ काम करने में शर्मिंदगी उठानी पड़ती है।

और वह आशीर्वाद और अभिशाप दोनों हो सकता है। तो जाहिर है, क्योंकि हमारे पास बहुत सारे सबूत हैं, हम आश्वस्त हो सकते हैं कि पाठ को फिर से बनाने की कोशिश करने के लिए हमारे पास काम करने के लिए और भी बहुत कुछ है। लेकिन चूँकि वहाँ बहुत कुछ है, कभी-कभी इतनी सारी सामग्री के साथ काम करना दमनकारी और चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

लेकिन मुद्दा यह है कि जब नए नियम के पाठ की बात आती है तो किसी भी अन्य ऐतिहासिक दस्तावेज़ की तुलना में साक्ष्य की अधिकता या शर्मिंदगी होती है। ताकि फिर से, हम आश्वस्त हो सकें कि न्यू टेस्टामेंट के लेखकों ने वास्तव में जो लिखा था, हम उसे बहुत, बहुत उच्च स्तर की संभावना के साथ फिर से बना सकते हैं। दूसरी बात यह है कि जब पाठ्य आलोचना की बात आती है तो आपके लिए कुछ महत्वपूर्ण शब्दों को समझना महत्वपूर्ण है।

दोबारा, बस इसलिए कि जब आप पाठ आलोचना या बदले में अपनी स्मरणीय पाठ्यपुस्तकों या जो कुछ भी पढ़ रहे हों या पढ़ने पर चर्चा कर रहे हों, तो आप जो चल रहा है उसका अनुसरण करने में सक्षम होंगे। पहला स्पष्टतः पांडुलिपि शब्द होगा। पांडुलिपि, जैसा कि नाम से पता चलता है, वास्तव में एक हस्तलिखित दस्तावेज़ है या हस्तलिखित या तो स्कॉल है या हम विभिन्न प्रकार



की लेखन सामग्री को देखेंगे, लेकिन एक हस्तलिखित दस्तावेज़ है जो नए नियम को प्रमाणित करता है।

फिर से, जैसा कि हमने कहा है, कभी-कभी हमारे पास जो साक्ष्य होते हैं, कभी-कभी वे वस्तुतः संपूर्ण नया नियम या उसके खंड या पुस्तक के केवल खंड या नए नियम के दस्तावेजों में से किसी एक अध्याय या पैराग्राफ का एक टुकड़ा होता है, लेकिन एक पांडुलिपि बस एक हस्तलिखित दस्तावेज़ या दस्तावेज़ का हिस्सा या टुकड़ा या जो कुछ भी नए टेस्टामेंट या नए टेस्टामेंट का हिस्सा है, चाहे वह एक अध्याय या पुस्तक या कुछ भी हो। वह एक पांडुलिपि है। एक और शब्द जिससे आपको परिचित होना चाहिए वह है वैरिएंट शब्द।

वैरिएंट मूल रूप से कोई भी परिवर्तन है जब आप पांडुलिपियों की तुलना करते हैं जहां भी वे भिन्न होते हैं, जहां एक पांडुलिपि दूसरे से भिन्न होती है। और फिर, अक्सर यह सिर्फ एक शब्द होता है, कभी-कभी सिर्फ वर्तनी का अंतर होता है, कभी-कभी यह शब्दों का समूह या कुछ बड़ा हो सकता है। हम मार्क के गॉस्पेल के बारे में थोड़ी बात करेंगे, वास्तव में मार्क के गॉस्पेल में कभी-कभी कुछ अलग-अलग अंत जुड़े होते थे, इसलिए कभी-कभी यह एक संपूर्ण पैराग्राफ हो सकता था।

लेकिन वैरिएंट केवल दो या दो से अधिक पांडुलिपियों के बीच का अंतर है। जब आप पांडुलिपियों की तुलना करते हैं जहां एक पांडुलिपि पढ़ने में भिन्न होती है, और इसमें एक अलग शब्द हो सकता है या एक शब्द गायब हो सकता है या कुछ भी हो सकता है, तो यह एक प्रकार है। और यह उन सभी प्रकारों में से है, फिर से, पाठ आलोचक यह निर्धारित करने का प्रयास करते हैं कि उनमें से कौन सा, जब आप सभी ग्रंथों की तुलना करते हैं, तो उनमें से कौन सा संभवतः वही दर्शाता है जो पॉल ने लिखा था या यशायाह या जो भी, 1 का लेखक और 2 राजा या उत्पत्ति।

एक और शब्द जिससे आपको परिचित होना चाहिए वह है पपीरस। पपीरस एक बहुत ही प्रारंभिक लेखन उपकरण था। पपीरस एक शीट थी जिसे मिस्र में पाए जाने वाले पपीरस पौधे की

पट्टियों का उपयोग करके बनाया गया था, और उन्हें बाहर खींचकर और उन्हें एक साथ चिपकाकर वे मूल रूप से एक शीट या पेज बनाने में सक्षम थे जो कुछ लिखने या रिकॉर्ड करने का एक बहुत ही प्रारंभिक साधन था। .

तो आपको यह जानना आवश्यक है कि पपीरस क्या है। इससे संबंधित दो अन्य शब्द जिन्हें आपको जानना आवश्यक है वह है स्कॉल। एक स्कॉल, फिर से, लेखन तकनीक का एक बहुत ही प्रारंभिक रूप था।

और यह क्या था कि आपने कई पपीरी शीटें लीं और मूल रूप से उन्हें एक साथ चिपका दिया और इसे लपेटा जा सकता था। वह एक स्कॉल था. दूसरा एक कोडेक्स है।

आपको यह भी समझना होगा कि कोडेक्स क्या है। कोडेक्स वह था जहां शीटों को पुस्तक के रूप में एक साथ बांधा जाता था, यह किताब को एक साथ रखने के बहुत प्रारंभिक रूप की तरह था। सभी शीटों को जोड़ने और उन्हें लपेटने के बजाय, उन्हें बस पुस्तक के रूप में एक साथ बांध दिया गया था।

वह एक कोडेक्स था. और ये बस विभिन्न प्रकार की पांडुलिपियाँ हैं जो हमारे पास उपलब्ध हैं और उन तक पहुँच है। बस कुछ अन्य शर्तों जिनके बारे में आपको अवगत होना आवश्यक है।

एक जो संभवतः स्पष्ट है, लेकिन फिर भी उल्लेख करने की आवश्यकता है, वह है मुंशी। एक मुंशी केवल वे लोग होंगे जिन्होंने नए नियम के पाठ या पुराने नियम के पाठ की नकल की और प्रतियां बनाईं। कुछ अन्य शब्द जिन्हें आपको समझने की आवश्यकता है वह है लिपिबद्ध प्रवृत्ति।

आप अक्सर उस शब्द को टेट्रा आलोचना की चर्चाओं में देखेंगे। लिपिक प्रवृत्ति का तात्पर्य केवल उन प्रकार की चीजों से है जो एक लिपिक करेगा। याद रखें कि हमने आमतौर पर कहा था कि लेखक किसी दस्तावेज़ को कैसे रिकॉर्ड करते हैं, या उसकी प्रतिलिपि बनाते हैं, क्या वे दस्तावेज़

को पढ़ेंगे, उन्हें अपने दिमाग में वही रखना होगा जो उन्होंने अपने पृष्ठ पर स्थानांतरित करते समय पढ़ा था, और इसे कॉपी कर लिया था।

और कुछ प्रवृत्तियाँ जिनके बारे में हम बाद में थोड़ी बात करेंगे, कुछ प्रवृत्तियाँ यह तय कर सकती हैं कि जब वह पाठ हुआ तो क्या हुआ, फिर से, एक मुंशी कुछ भूल सकता है, या एक मुंशी जानबूझकर कुछ कर सकता है, एक मुंशी किसी चीज़ में सामंजस्य बिठाने की कोशिश कर सकता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई लेखक गॉस्पेल में से किसी एक में कुछ पढ़ रहा था, और ऐसा लग रहा था कि यह उसके साथ विरोधाभासी है, तो हो सकता है कि उसने एक सप्ताह पहले ही मैथ्यू के गॉस्पेल की नकल की हो, और अब वह मार्क पर काम कर रहा हो, और इसमें अंतर प्रतीत होता है . वह इसमें सामंजस्य स्थापित करने और इसे ध्वनिमय बनाने का प्रयास कर सकता है, दोनों सुसमाचारों को एक-दूसरे के समान ध्वनि प्रदान कर सकता है।

तो कुछ निश्चित प्रवृत्तियाँ हैं। जब एक मुंशी नकल कर रहा था, या जब एक मुंशी किसी पाठ को पढ़ कर सुन रहा था और उसे रिकॉर्ड कर रहा था, तो कुछ निश्चित प्रवृत्तियाँ होती हैं, कुछ चीज़ें जो एक मुंशी कर सकता है, और हम उनके बारे में थोड़ा और बात करेंगे। अंतिम दो हैं, और कई अन्य शब्द हैं जिनके बारे में हम बात कर सकते हैं, लेकिन मैं इसे सरल रखना चाहता हूँ और प्रमुख शब्दों का परिचय देना चाहता हूँ।

उनमें से एक शब्द है अनसील. यह एक प्रकार की पांडुलिपि का विवरण है। एक खुली पांडुलिपि मूल रूप से थी, और यह लेखन की शैली को अधिक संदर्भित करती है, पपीरस या स्कॉल या कोडेक्स के विपरीत जो पांडुलिपि के प्रकार को संदर्भित करती है, यह लेखन की शैली को अधिक संदर्भित करती है।

एक खुली पांडुलिपि वह थी जो मूल रूप से सभी बड़े अक्षरों में लिखी गई थी। अधिकांशतः, मुझे विश्वास है कि न्यू टेस्टामेंट के अधिकांश दस्तावेज़ संभवतः बिना सील की गई लिपि में लिखे गए होंगे। अर्थात्, लेखक ने ग्रीक में सभी बड़े अक्षरों में लिखा होगा, और शब्दों के बीच कोई रिक्त स्थान नहीं होगा।

आज की हमारी अधिकांश भाषाओं के विपरीत, जहां हम शब्दों के बीच जगह रखते हैं ताकि इसे निर्धारित करना आसान हो, खुली पांडुलिपियों में शब्दों के बीच जगह नहीं होती। वाक्य एक साथ चलाये गये होंगे और वस्तुतः कोई विराम चिह्न भी नहीं होगा। वह एक खुली पांडुलिपि है।

बहुत बाद में, कई शताब्दियों के बाद, कई पांडुलिपियाँ वही हैं जिन्हें लघु कहा जाता है। यह आखिरी शब्द है जिससे मैं आपका परिचय कराना चाहता हूँ। माइनसक्यूल।

वह अधिक घसीट प्रकार का लेखन था, और बाद में, शब्दों को एक-दूसरे से अलग किया जाने लगा और विभाजित किया जाने लगा। तो ये कुछ अधिक महत्वपूर्ण शब्द हैं। पाण्डुलिपि, संस्करण, पेपिरस, स्कॉल, और कोडेक्स, लिपिक, लिपिक प्रवृत्तियाँ, और फिर पांडुलिपियों के सीलबंद और छोटे प्रकार।

ये ऐसे शब्द हैं जिन्हें आप अक्सर तब देखेंगे जब आप पाठ आलोचना के बारे में पढ़ रहे हों या चर्चाएँ सुन रहे हों। लेकिन वे केवल उन प्रकार के साक्ष्यों का वर्णन करने के तरीके हैं जिनके साथ पाठ आलोचक यथासंभव सटीक और यथासंभव बारीकी से मूल पांडुलिपियों का पुनर्निर्माण करने का प्रयास करते हैं जिन्हें नए और पुराने नियम के लेखकों ने तैयार किया होगा। तो सबसे पहले, जब नए नियम की बात आती है तो सबूतों की शर्मिंदगी होती है।

दूसरा, मैंने आपको कुछ महत्वपूर्ण शब्दों से परिचित कराया है। पाठ्य आलोचना के बारे में तीसरी बात यह है कि पांडुलिपियाँ बहुत भिन्न प्रकार की होती हैं। नए नियम के लेखक जिन पांडुलिपि साक्ष्यों के साथ काम करते हैं वे बहुत अलग प्रकार के हैं।

कभी-कभी, बहुत सारे पांडुलिपि साक्ष्यों में नए नियम की वास्तविक प्रतियाँ शामिल होती हैं। ग्रीक भाषा में, चाहे वे बिना सीलबंद पांडुलिपियाँ हों, शब्दों के बीच बिना किसी विभाजन के बड़े अक्षर हों, या बाद में अधिक घसीट प्रकार की लिपियाँ हों। हमारे कुछ, हमारे बहुत सारे पांडुलिपि साक्ष्य न्यू टेस्टामेंट पाठ की ग्रीक में वास्तविक प्रतियों के रूप में हैं।

लेकिन दूसरा, और हमने कहा कि कभी-कभी वे बहुत खंडित होते हैं, नए नियम में एक खंड का एक टुकड़ा मात्र। अन्य समय में, यह एक पूरी किताब या किताब का हिस्सा या कई किताबें होती हैं। वे, या कभी-कभी वस्तुतः संपूर्ण नया नियम हैं, लेकिन हमारी बहुत सी पांडुलिपियों में नए नियम के पाठ की वास्तविक प्रतियां शामिल हैं।

इसके अलावा, हमारे पास प्रारंभिक चर्च फादरों के उदाहरण हैं, विशेष रूप से तीसरी और चौथी शताब्दी से, जहां चर्च के फादर, आरंभिक, प्रारंभिक चर्च के नेता, नए नियम के लेखन के पूरा होने के बाद, प्रारंभिक चर्च के फादर अक्सर नए नियम से उद्धरण. और नए नियम के पाठ से उनके उद्धरण अक्सर हमें बताते हैं कि उनके पास कौन सी पांडुलिपि हो सकती है, या नए नियम का कौन सा रूप उनके पास उपलब्ध हो सकता है। तो, दूसरे शब्दों में, चर्च के पिता नए नियम से जो उद्धरण उद्धृत कर रहे हैं, उनके उद्धरण निर्माण के लिए मूल्यवान साक्ष्य प्रदान करते हैं, नए नियम के पुनर्निर्माण में मदद करते हैं और इसके शब्दों और इसमें क्या कहा गया है।

इसलिए चर्च के पिता महत्वपूर्ण हैं। हमारे पास भी हैं, हमारे पास न्यू टेस्टामेंट के विभिन्न संस्करण या शुरुआती अनुवाद भी हैं। जैसे-जैसे नए नियम की पांडुलिपियाँ अधिक व्यापक रूप से, भौगोलिक रूप से फैलती गईं, और अन्य लोगों, अन्य भाषाएँ बोलने वाले लोगों के लिए और अधिक उपलब्ध कराने की आवश्यकता हुई, नए नियम के अनुसार, हमारे पास सिरिएक या लैटिन और कुछ भाषाओं में नए नियम के बहुत शुरुआती अनुवाद हैं। अन्य भाषाएं।

और वे अनुवाद इस बात का प्रमाण देने में भी मदद कर सकते हैं, आप जानते हैं कि इन प्रारंभिक ईसाइयों के पास नए नियम का पाठ किस रूप में उपलब्ध था। इसलिए, पाठ समीक्षक साक्ष्य के इन सभी टुकड़ों को ध्यान में रखते हुए यह पुनर्निर्माण करने का प्रयास करते हैं कि पॉल ने सबसे अधिक संभावना क्या लिखी थी, या पांडुलिपि के मूल रूप में मैथ्यू ने सबसे अधिक क्या लिखा था। मूल पाठ में।

कहने की चौथी बात यह है कि सभी साक्ष्य, और सभी साक्ष्य और पांडुलिपियां जो हमारे पास उपलब्ध हैं, नए नियम के पाठ आलोचकों ने कोशिश की है और सोचते हैं कि वे उन्हें विभिन्न

परिवारों के अनुसार वर्गीकृत कर सकते हैं। इसलिए कुछ पाठों, पाठ्य आलोचकों, और वह एक अन्य शब्द, पाठ्य आलोचकों के बीच समानता के आधार पर सबूतों का यह सब दिखावा करने के बजाय, किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करें जो पाठ्य आलोचना में लगा हुआ है और मूल पाठ के पुनर्निर्माण का प्रयास कर रहा है, लेकिन पाठ्य आलोचकों सोचें कि वे इन सभी पांडुलिपियों और इन सभी साक्ष्यों को कुछ परिवारों में वर्गीकृत कर सकते हैं। वे पांडुलिपियाँ जिनका एक-दूसरे से वंशावली संबंध प्रतीत होता है।

ऐसी पांडुलिपियाँ जो एक ही माता-पिता या एक ही स्रोत से आती हुई प्रतीत होती हैं। उदाहरण के लिए, मैं केवल दो का उल्लेख करूंगा, या संक्षेप में वर्णन करूंगा, दो ऐसे परिवार जिनके बारे में पाठ समीक्षक सोचते हैं कि वे अस्तित्व में थे और ऐसा लगता है कि वे पांडुलिपियों को वर्गीकृत कर सकते हैं। अधिक प्रसिद्ध पांडुलिपियों में से एक को अलेक्जेंडरियन परिवार कहा जाता है।

अलेक्जेंड्रियन परिवार पांडुलिपियों के एक समूह का वर्णन करता है, जो एक सामान्य वंशावली प्रतीत होती है, जो मिस्र के अलेक्जेंड्रिया में कॉपी की गई पांडुलिपियों तक जाती है, इसलिए पांडुलिपियों का अलेक्जेंड्रिया परिवार है। और पांडुलिपियों के उस परिवार को अधिक उच्च गुणवत्ता वाला माना जाता है और ऐसा माना जाता है कि इसमें कम परिवर्तन और कम सामंजस्य होता है और पाठ को सुचारू बनाने का प्रयास किया जाता है। यह अक्सर देखा गया है, ऐसा प्रतीत होता है कि यह पुराने पाठों को प्रतिबिंबित करता है।

इसलिए अधिकांश पाठ समीक्षक सोचते हैं कि अलेक्जेंड्रियन प्रकार के पाठ बहुत उच्च गुणवत्ता वाले हैं और मूल नए नियम के पाठ के पुनर्निर्माण की कोशिश में बहुत महत्वपूर्ण हैं। दूसरे प्रकार के परिवार को पश्चिमी पांडुलिपि कहा जाता है। लेकिन तीसरा प्रकार जिस पर मैं बहुत संक्षेप में चर्चा करना चाहता हूँ उसे बीजान्टिन कहा जाता है।

हमारी अधिकांश नए नियम की यूनानी पांडुलिपियाँ इसी श्रेणी में आती हैं। यह बहुत बाद की बात है। इसे बाद के पांडुलिपि परिवार के रूप में देखा जाता है जो अलेक्जेंड्रियन की तुलना में बहुत बाद में उत्पन्न हुआ।

इसे अक्सर पाठ को सुचारू करने के प्रयासों की विशेषता होती है, जहां यदि कोई लेखक पांडुलिपियों के इस परिवार के संबंध में लिख रहा है, यदि किसी लेखक को लगता है कि कोई पाठ बहुत कठिन है तो वह इसे सुचारू करने का प्रयास कर सकता है या वह इसे किसी अन्य पाठ या किसी चीज़ के साथ सामंजस्य बनाने का प्रयास कर सकता है। उस तरह। बीजान्टिन पांडुलिपि परिवार को महत्वपूर्ण माना जाता है, हालांकि कभी-कभी अलेक्जेंड्रियन जितना महत्वपूर्ण नहीं होता है। लेकिन यह अभी भी इस संभावना का प्रमाण प्रदान करता है कि इन पांडुलिपियों में नए नियम के पाठ का मूल पाठ शामिल हो सकता है।

लेकिन पाठ आलोचकों को समझना महत्वपूर्ण है, हालांकि केवल साक्ष्यों की गिनती न करें या यह न कहें कि यदि अलेक्जेंड्रियन के पास यह है या यदि 50 पांडुलिपियों में यह पाठ है और केवल तीन या चार में यह है, तो 50 वाला सही है। यह केवल पांडुलिपियों की गिनती नहीं कर रहा है, बल्कि यह उन सभी सबूतों को ले रहा है जिन्हें हम एक पल में देखेंगे और यह पता लगाने की कोशिश करने के लिए इसे तौलेंगे कि पॉल या ल्यूक या मैथ्यू या पुराने नियम के लिए फिर से यशायाह या भजनहार ने क्या किया, क्या सबसे अधिक संभावना यह है कि क्या उन्होंने लिखा है? तो फिर से सभी पांडुलिपियों में से विद्वानों का मानना है कि वे उन्हें अलग-अलग परिवारों में विभाजित कर सकते हैं जो एक समान संबंध से संबंधित प्रतीत होते हैं। वे सभी पाण्डुलिपियाँ जिनका एक-दूसरे से समान संबंध है तथा जिनका पाठ्य-पाठ समान प्रकार का है, एक ही परिवार की प्रतीत होती हैं।

पांचवीं बात जो पांचवीं अवधारणा आपको पेश करनी है वह यह विचार है कि नए नियम के पाठ के पुनर्निर्माण में पाठ आलोचक दो प्रकार के साक्ष्यों का उपयोग करते हैं। इनमें से एक को बाह्य साक्ष्य और एक को आंतरिक साक्ष्य के नाम से जाना जाता है। बाहरी साक्ष्य इन सभी पांडुलिपियों की तारीख और क्या वे किस परिवार से संबंधित हैं जैसी चीजों का उल्लेख करेंगे।

हमने सिर्फ अलेक्जेंड्रिया या बीजान्टिन या पश्चिमी को देखा ताकि वे सबूतों को देख सकें कि ये पांडुलिपियाँ किस परिवार से संबंधित थीं? इन पांडुलिपियों की तारीख क्या है? क्या वे बहुत जल्दी

हैं? क्या वे बहुत बाद के हैं? सिर्फ इसलिए कि कोई जल्दी है और कोई देर से है, इसका मतलब यह नहीं है कि कोई सही है और कोई नहीं। यह केवल साक्ष्य का एक हिस्सा है जिसे वे ध्यान में रखते हैं। भौगोलिक वितरण, चाहे एक पांडुलिपि में एक निश्चित पाठन एक स्थान से बंधा हुआ प्रतीत हो, एक पाठन के विपरीत जो भौगोलिक रूप से व्यापक रूप से फैला हुआ हो सकता है।

यह कई भौगोलिक स्थानों में दिखाई दे सकता है। और कई अन्य कारक भी हैं जिन्हें ध्यान में रखा जाता है। लिपिबद्ध प्रवृत्तियाँ, एक लेखक जब नकल कर रहा होता है या पढ़ते हुए पाठ को सुन रहा होता है तो उसके क्या करने की संभावना होती है।

यह सब बाहरी साक्ष्य कहा जाता है और यह सब फिर से निर्धारित करने की कोशिश में ध्यान में रखा जाता है, कि पुराने नए नियम के लेखक ने सबसे अधिक संभावना क्या लिखी थी? दूसरे को आंतरिक साक्ष्य कहा जाता है। आंतरिक साक्ष्य पाठ में ही साक्ष्य को संदर्भित करता है। यानि लेखक की शैली के बारे में हम क्या जानते हैं? हम उनके व्याकरण और उनके द्वारा प्रयुक्त शब्दों के बारे में क्या जानते हैं? हम उनके धर्मशास्त्र के बारे में क्या जानते हैं? तो दस्तावेज़ के व्यापक संदर्भ को देखते हुए, विशेष रूप से पॉल के लिए उसके सभी पत्रों को देखना और उसकी धार्मिक प्रवृत्तियों आदि को देखना।

और उस साक्ष्य को फिर से आंतरिक रूप से उपयोग करना, जो पाठ में ही साक्ष्य है, लेखकों, पाठ आलोचकों को यह स्थापित करने में मदद करने के लिए कि मूल पाठ सबसे अधिक संभावना क्या था। उदाहरण के लिए, कोई, फिर से जब आप सभी पांडुलिपियों को देखते हैं और उनके बीच कुछ भिन्नता होती है, तो सही पांडुलिपि वह हो सकती है जो पॉल की शैली और उसकी शब्दावली, पत्र में उसके धर्मशास्त्र और उसके द्वारा लिखे गए पत्रों में अन्यत्र के अनुरूप होगी। . हम उस पाठ को चुनने का प्रयास कर रहे हैं जो पॉल और उसके धर्मशास्त्र और अन्यत्र उसके लेखन के बारे में हम जो जानते हैं उसके साथ सबसे अधिक सुसंगत है।

तो यह आंतरिक साक्ष्य है. फिर, कुछ पाठ समीक्षक एक को दूसरे से अधिक पसंद करते हैं। कुछ लोग यह तय करते समय आंतरिक साक्ष्य पर सहमति देंगे कि कौन सा पाठन सही है।



कुछ लोग बाहरी साक्ष्यों पर अधिक ध्यान देंगे। अन्य लोग फिर से उन दोनों को तौलने का प्रयास करेंगे और जितना संभव हो सके उन दोनों को ध्यान में रखेंगे। तो फिर, कुछ लोग एक ही परिवार पर ध्यान केंद्रित करना पसंद कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, कुछ पाठ समीक्षकों ने अलेक्जेंड्रिया परिवार को प्राथमिकता दी है। याद रखें कि हमने विभिन्न पांडुलिपियों के बारे में बात की थी जिन्हें परिवारों और वंशावली संबंधों के अनुसार समूहीकृत किया जा सकता है। कुछ पाठ आलोचक अलेक्जेंड्रियन को प्राथमिकता देंगे क्योंकि अलेक्जेंड्रियन प्रकार की पांडुलिपियों में पाया गया कोई भी पाठ संभवतः मूल है।

एक और, अन्य पाठ आलोचक बीजान्टिन को प्राथमिकता दे सकते हैं और बाकी सब कुछ समान होने पर, पांडुलिपियों के बीजान्टिन परिवार में पाया गया पाठ पसंदीदा होगा। ऐसा लगता है कि पाठ आलोचना की एक विधि ने उस पर पकड़ बना ली है जिससे अधिकांश लोग सहमत होंगे जिसे एक उदार विधि कहा जाता है। उदार, तर्कपूर्ण उदारवाद इसके लिए प्रचलित शब्द है।

बस इसका मतलब यह है कि सभी सबूतों पर विचार करना और उनका वजन करना और किसी एक को प्राथमिकता देना जरूरी नहीं है, बल्कि सभी सबूतों, आंतरिक, बाहरी, पांडुलिपि की तारीख, जिस परिवार से वह संबंधित है, उसका वजन करना है। पुनः, यदि आप सभी पांडुलिपियों को देख रहे हैं और एक श्लोक में, पांडुलिपियों में कुछ भिन्नताएं हैं, सभी साक्ष्यों, तिथि, वितरण का वजन कर रहा है, चाहे वह बीजान्टिन, अलेक्जेंड्रियन हो, लिपिबद्ध प्रवृत्तियों को देख रहा हो, आंतरिक रूप से देख रहा हो लेखक की शैली, उसकी शब्दावली, उसका व्याकरण, आदि। इन सभी को ध्यान में रखते हुए सबसे तर्कसंगत प्रयास करना संभव है, सबसे तर्कसंगत पुनर्निर्माण संभव है जो संभवतः मूल लेखक ने जो लिखा है उसे प्रतिबिंबित करता है।

न्यू टेस्टामेंट में, कम से कम, दो ग्रीक पाठ हैं जो सामान्य पाठ के रूप में उभरे हैं जिनका उपयोग अधिकांश न्यू टेस्टामेंट प्रोफेसर और छात्र करते हैं। उनमें से एक यूनाइटेड बाइबल सोसाइटी, यूबीएस है, जिसका चौथा संस्करण अभी सामने आया है। और वैसे, अधिकांश पांडुलिपियाँ,

अधिकांश ग्रीक नए नियम जो हमारे पास हैं, वे आम तौर पर संपादित और अद्यतन होते रहते हैं क्योंकि अधिक सबूत मिलते हैं, कभी-कभी जब हम पाठ समस्याओं को देखने के नए तरीके खोजते हैं।

यह एक बार फिर से यथासंभव बारीकी से पुनर्निर्माण करने का प्रयास चल रहा है कि मूल पांडुलिपि कैसी दिखती थी। लेकिन आम पांडुलिपियों में से एक यूनाइटेड बाइबल सोसाइटी, चौथा संस्करण है। दूसरा वह है जिसे नेस्ले-अलैंड के नाम से जाना जाता है, वे दो नाम, नेस्ले और अलैंड, प्राथमिक संपादकों को दर्शाते हैं।

नेस्ले-अलैंड पाठ, जो अपने 27वें संस्करण में है, वे दो बहुत आम हैं और आज सबसे प्रमुख और आम नए नियम के पाठ हैं जो पाठ आलोचना के आधार पर तैयार किए गए हैं। तो फिर, सभी पांडुलिपि साक्ष्यों को लेते हुए और सभी संभावनाओं को तौलते हुए, आदि। ये वे पाठ हैं जो तैयार किए गए हैं जो प्रतिबिंबित करते हैं और यह दर्शाने के हमारे प्रयासों को सबसे करीब से दर्शाते हैं कि नए नियम के लेखकों ने वास्तव में क्या लिखा था।

संक्षेप में बात करने के लिए एक अन्य अंतिम मुद्दा उन परिवर्तनों के लिए विभिन्न प्रकार के परिवर्तन और प्रेरणाएं हैं जो एक लेखक पेश कर सकता है। फिर से, याद रखें, चूंकि मुंशी के पास एक पांडुलिपि है जिसे वह कॉपी कर रहा है, और जैसे ही वह इसकी नकल कर रहा है, उसे एक पंक्ति पढ़नी होगी, या एक मुंशी ने कितना भी पढ़ा हो, कुछ शब्द या एक पंक्ति, और फिर उसे अपने दिमाग में रखना होगा फिर वह आगे बढ़ता है और इसे खाली पृष्ठ पर लिखना शुरू करता है। जैसा कि वह ऐसा करता है, या हमने कहा कि दूसरी संभावना यह थी कि एक लेखक किसी को पाठ पढ़ते हुए सुन रहा होगा।

जैसे ही वे दो परिदृश्य घटित हो रहे हैं, कुछ परिवर्तन हो सकते हैं और उन्हें उस पांडुलिपि में पेश किया जा सकता है जिसे लेखक तैयार कर रहा है। उदाहरण के लिए, और थोड़ा पीछे जाने के लिए, ये परिवर्तन दो प्रकार के होते हैं। इनमें से कुछ परिवर्तन आकस्मिक हैं, या इनमें से कुछ परिवर्तन या गलतियाँ आकस्मिक हैं।

अर्थात्, वे अनजाने में घटित होते हैं, और हम उनमें से कुछ के बारे में बात करेंगे। दूसरा प्रकार जानबूझकर है। एक लेखक जानबूझकर पांडुलिपि को किसी तरह से सुधारने का प्रयास कर सकता है।

तो उसके पास यह पांडुलिपि है, हो सकता है कि उसे इसमें कोई कठिनाई दिखे, या कुछ ऐसा जो अस्पष्ट हो, जिसे वह सुधारने का प्रयास करेगा। इसलिए कुछ बदलाव जानबूझकर किए गए हैं। तो जानबूझकर परिवर्तन यह हो सकता है।

एक बहुत ही सामान्य जानबूझकर परिवर्तन सामंजस्य है। फिर, एक मुंशी, विशेष रूप से सुसमाचार के साथ, एक मुंशी एक सुसमाचार को दूसरे के साथ सामंजस्य बिठाने का प्रयास कर सकता है। फिर, उदाहरण के लिए, यदि कोई लेखक नकल कर रहा है, तो यह इस बात का एक बहुत ही प्रमुख उदाहरण है कि यह कैसे हुआ है।

यदि लेखक ल्यूक में प्रभु की प्रार्थना की नकल कर रहा है, और शायद लेखक मैथ्यू अध्याय 6 में प्रभु की प्रार्थना के संस्करण के बारे में अच्छी तरह से जानता है, तो जो लेखक ल्यूक की नकल कर रहा है वह जानबूझकर ल्यूक के प्रभु की प्रार्थना के संस्करण को उचित बनाने की कोशिश कर सकता है मैथ्यू की तरह, क्योंकि वह चाहता है कि उनकी आवाज़ एक जैसी हो। इसमें कोई विसंगति या अंतर नहीं हो सकता। इसलिए एक लेखक जानबूझकर, विशेष रूप से गॉस्पेल के साथ, कुछ पाठों में सामंजस्य बिठाने की कोशिश कर सकता है।

फिर, यदि लेखक ने शायद मैथ्यू की नकल की है या मैथ्यू के बारे में जानता है, और जैसा कि वह अब मार्क या ल्यूक की नकल कर रहा है, तो वह जानबूझकर उन्हें एक-दूसरे के अनुरूप बनाने की कोशिश कर सकता है। दूसरा एक मुंशी है, दूसरा एक मुंशी है जो किसी ऐसी चीज़ को सुधारने या सुचारू करने का प्रयास कर सकता है जो कठिन है या कोई समस्या या गलत या असंगति प्रतीत होती है। तो फिर, एक लेखक एक पाठ पढ़ रहा हो सकता है और विशेष रूप से शायद धर्मशास्त्रीय रूप से, हो सकता है कि पाठ प्रश्नचिह्न लगाता प्रतीत हो, जिस तरह से इसे

लिखा गया है वह कुछ ऐसा प्रश्नचिह्न लगाता प्रतीत हो सकता है जो लेखक के धर्मशास्त्रीय विश्वास के साथ टकराव करता हो।

इसलिए लेखक इसे बदल सकता है या सटीक धर्मशास्त्र या ऐसा कुछ प्रतिबिंबित करने के लिए इसे अद्यतन कर सकता है। तो ये जानबूझकर किए गए परिवर्तनों के उदाहरण हैं, जहां फिर से, परिणाम लेखक है, और यह महत्वपूर्ण है, लेखक किसी तरह से पाठ को बेहतर बनाने की कोशिश कर रहा है। वह इसे स्पष्ट करने, इसमें सामंजस्य स्थापित करने, संघर्षों या विसंगतियों को दूर करने की कोशिश कर रहा है जैसा कि वह उन्हें देखता है, इसे चर्च के धर्मशास्त्र और मानक धार्मिक विश्वास के अनुरूप बनाता है, और किसी भी विसंगतियों को दूर करने का प्रयास करता है।

इसलिए अधिकांश जानबूझकर किए गए परिवर्तन पाठ को बेहतर बनाने के प्रयास हैं। लेकिन दूसरे प्रकार का परिवर्तन अनजाने में होता है। वे परिवर्तन, फिर से, जो मुंशी द्वारा अनजाने में पेश किए जाते हैं।

लेखक पांडुलिपि में सुधार करने की कोशिश नहीं कर रहा है, बल्कि ये परिवर्तन हैं जो आकस्मिक रूप से पेश किए गए हैं। फिर, उनमें से अधिकांश, जब लेखक एक पांडुलिपि पढ़ता है और फिर उसे किसी अन्य पांडुलिपि में रिकॉर्ड करने के लिए स्थानांतरित करता है, या जब लेखक पढ़े गए पाठ को सुन रहा है और उसे रिकॉर्ड कर रहा है, तो कुछ अनजाने परिवर्तन उत्पन्न हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक मुंशी अपना स्थान खो सकता है।

आपने ऐसा पहले भी किया होगा, शायद, यदि आप पढ़ रहे हों, और विशेष रूप से यदि आप थक जाते हों। यदि आप कभी सचमुच थके हुए हैं और आप एक पैराग्राफ पढ़ रहे हैं और आप पढ़ते हैं, तो आपने उसी पंक्ति को दोबारा पढ़ने का अनुभव किया है। जब लेखक पांडुलिपियाँ पढ़ते और रिकॉर्ड करते थे तो अक्सर थक जाते थे, और इसलिए कभी-कभी वे थक जाते थे, खासकर यदि वे एक पांडुलिपि से दूसरी पांडुलिपि में जा रहे हों, तो वे एक पंक्ति पढ़ सकते हैं

और उसे रिकॉर्ड कर सकते हैं, और जब वे वापस जाते हैं, तो वे पढ़ सकते हैं। फिर से वही पंक्ति, और इसलिए इसे दूसरी बार रिकॉर्ड करें।

या एक और सामान्य बात यह है कि वे गलती से एक या दो पंक्तियाँ छोड़ सकते हैं। इसलिए चूँकि वे पांडुलिपि पढ़ रहे हैं और वे एक पंक्ति रिकॉर्ड करते हैं, जब वे वापस जाते हैं, तो हो सकता है कि वे उसी स्थान पर न जाएँ। वे गलती से एक पंक्ति छोड़ सकते हैं, खासकर यदि पंक्ति उसी तरह से शुरू होती है जिस तरह से उसके पहले की पंक्ति शुरू होती है, लेकिन मुद्दा यह है कि जब वे जिस पांडुलिपि की प्रतिलिपि बना रहे हैं और पांडुलिपि के बीच आगे और पीछे जा रहे हैं तो वे गलती से एक पंक्ति छोड़ सकते हैं। नई पांडुलिपि जो वे तैयार कर रहे हैं।

तो इस तरह के कुछ परिवर्तन जो अनजाने में होते हैं, अब उस नई पांडुलिपि में परिलक्षित होते हैं जिसे लेखक ने तैयार किया है। और फिर आप देख सकते हैं कि क्या हुआ। यदि कोई उस पांडुलिपि का उपयोग करता है और उसकी प्रतिलिपि बनाता है, तो वही गलती बाद की पांडुलिपियों में हो सकती है।

और जैसे-जैसे शाखा, पेड़, शाखाएँ निकलती हैं, अन्य पांडुलिपियाँ उन्हीं गलतियों को अपना सकती हैं जो मुंशी कर रहा है या अनजाने में बदलाव कर रहा है। पांडुलिपि में भिन्नता का एक अन्य स्रोत श्रवण के माध्यम से, सुनने की त्रुटियाँ हैं। अर्थात्, एक लेखक के रूप में या जब कोई पांडुलिपि को दोबारा पढ़ रहा हो, तो वह व्यक्ति कुछ स्पष्ट रूप से उच्चारण नहीं कर सकता है।

और इसके अलावा, विशेष रूप से जैसे-जैसे प्रारंभिक शताब्दियों में, पहली शताब्दी से आगे की शताब्दियों में ग्रीक भाषा की प्रगति हुई, और यह पहली शताब्दी में पहले से ही हो रहा था, कुछ स्वरों का उच्चारण, या यहाँ तक कि स्वरों का संयोजन, समान रूप से उच्चारित होने लगा। ताकि, या कुछ शब्दों का उच्चारण भी एक जैसा किया जा सके। और इसलिए यदि लेखक कोई ध्वनि सुनता है और उसे वास्तव में एक से अधिक अक्षरों द्वारा दर्शाया जा सकता है, तो वह कौन सा अक्षर लिखने जा रहा है? उदाहरण के लिए, अंग्रेजी भाषा में, यदि कोई बोर शब्द कहता है, तो क्या वह BORED है? कि मैं अपने मन से ऊब गया हूँ? या यह बोर्ड है? जैसे कोई बोर्ड.

या फिर भी, आप जानते हैं, बोर्ड शब्द के स्वयं कई अर्थ हो सकते हैं। तो अंग्रेजी में भी, आप जानते हैं, जहां शब्द अक्सर एक जैसे लगते हैं। और अक्सर संदर्भ उसे स्पष्ट करने में मदद करने के लिए पर्याप्त होता है।

लेकिन आप देखिए मेरा मतलब क्या है. जैसे कोई कुछ पढ़ रहा हो तो उसका उच्चारण वैसा नहीं हो सकता। या ग्रीक में, खासकर जब स्वरों का उच्चारण एक जैसे होने लगे।

जब कोई लेखक किसी पढ़ी हुई बात को सुन रहा हो, पढ़ी जा रही हो, तो वह उसका उच्चारण कैसे करेगा? जो कुछ उसने अभी-अभी सुना है उसे लिखने के अलग-अलग तरीके हो सकते हैं। और संभवतः उनके पास हाथ उठाकर यह पूछने की सुविधा नहीं थी कि यह कैसे लिखा गया है या ऐसा कुछ। तो पांडुलिपि में कुछ बदलाव, पांडुलिपियों के बीच कुछ अंतर कुछ ग्रीक शब्दों की विभिन्न ध्वनियों का परिणाम हो सकते हैं।

एक और उदाहरण एक प्रकार का एक और उदाहरण होगा जो देखने में हवा से आ सकता है। इसका एक अंग्रेजी उदाहरण. खैर, ऐसा करने का एक तरीका बस कुछ अक्षरों को उलट देना होगा।

उदाहरण के लिए, और यह किसी शब्द के अर्थ में बड़ा अंतर ला सकता है। उदाहरण के लिए, केवल दो अक्षरों को उलटकर अंग्रेजी शब्द डॉग और गॉड के बीच अंतर को देखें। इससे उस शब्द के अर्थ में काफी बदलाव आ जाता है।

और ग्रीक में भी यही सच था। एक लेखक, जब वह एक से दूसरे की ओर जा रहा होता है, तो वह गलती से एक शब्द पढ़ते समय दो अक्षरों को उलट सकता है, जिससे बहुत अलग अर्थ निकल सकता है। और फिर, शास्त्री थक गये।

उनमें से कुछ की आँखें शायद खराब थीं। हो सकता है कि वे उस दिन बुरे रवैये के साथ उठे हों या उन्हें रात में अच्छी नींद न आई हो। और यह सब किसी पाठ को सटीक रूप से कॉपी करने की उनकी क्षमता को प्रतिबिंबित करेगा।

और इसलिए कभी-कभी जब वे पांडुलिपियों की नकल कर रहे होते हैं तो दृष्टि संबंधी त्रुटियाँ उन्हें एक शब्द लिखने, फिर से, अक्षरों को उलटने या ऐसा कुछ करने का कारण बन सकती हैं, और जिस पांडुलिपि की वे नकल कर रहे हैं उसमें एक प्रकार या परिवर्तन उत्पन्न कर सकते हैं। एक अंतिम जो दिलचस्प होता है वह कभी-कभार होता है, और पाठ आलोचकों के लिए इनसे निपटना थोड़ा आसान होता है, कभी-कभी यह एक सामान्य अभ्यास होता है। यह एक तरह से दिलचस्प है.

कभी-कभी हाशिये पर बैठे लेखकों के लिए नोट्स बनाना एक आम बात थी। कभी-कभी यह पाठ के बारे में काफी गंभीर टिप्पणी हो सकती है। कभी-कभी यह कुछ और भी हो सकता है, जैसे, मेरे हाथ ठंडे हैं, या मेरी स्याही खत्म हो रही है, या मेरी पत्नी ने आज टोस्ट जला दिया, या हाशिये पर ऐसा कुछ लिखा हो सकता है।

और फिर जब किसी अन्य लेखक के पास वह पाठ होता है और वह उसकी नकल कर रहा होता है, तो लेखक गलती से उस नोट को पाठ के ठीक हाशिये में शामिल कर सकता है। तो मार्क के पाठ के ठीक बीच में, कुछ ऐसा हो सकता है जैसे, मेरे हाथ ठंडे हो रहे हैं, क्योंकि मूल लेखक ने यह किस तरह का नोट लिखा होगा। तो, फिर से, जब लेखक कभी-कभी हाशिये पर छोटे नोट लिखते हैं, कि, यदि बाद में वह पांडुलिपि किसी और के द्वारा कॉपी की जाती है, तो हाशिये के वे छोटे नोट वास्तव में पाठ में समाप्त हो सकते हैं।

और इसलिए फिर से, यह समझकर कि क्या हो रहा है, पाठ आलोचकों को इसे हटाने की अनुमति दी जाती है और यह महसूस किया जाता है कि संभवतः किसी लेखक ने इसे स्वयं डाला है। तो ये हैं, ये कुछ लिपिबद्ध प्रवृत्तियाँ हैं। ये कुछ चीजें हैं जो एक लेखक कर सकता है।

और इसलिए फिर से, एक पाठ समीक्षक पीछे की ओर काम करेगा, और इन सभी प्रकारों में से, यह कहने का प्रयास करेगा कि क्या मैं किसी लेखक द्वारा अनजाने या जानबूझकर किए गए परिवर्तनों के आधार पर इनमें से कुछ परिवर्तनों की व्याख्या कर सकता हूँ? और अगर मैं ऐसा कर सकता हूँ, तो मैं यह बताना शुरू कर सकता हूँ कि पॉल या ल्यूक या मैथ्यू ने क्या, सबसे अधिक संभावना क्या लिखी थी? मुझे पाठ आलोचना के बारे में एक अंतिम बात कहने दीजिए, फिर हम संक्षेप में कुछ उदाहरण देखेंगे। तीन, मैं आपको केवल तीन सिद्धांत देना चाहता हूँ जिनके साथ पाठ आलोचक अक्सर काम करते हैं, वे क्या, कौन से सिद्धांत या किस प्रकार के मानकों का उपयोग करते हैं? उनके द्वारा लिए गए निर्णयों को कौन से सिद्धांत सूचित करते हैं? उनमें से एक यह है कि आम तौर पर जब आप शुरू करते हैं, जब आप किसी व्यक्ति के सभी पढ़ने की तुलना करते हैं, तो फिर, यदि, यदि आप हैं, यदि कोई पाठ समीक्षक है, तो मार्क अध्याय 1 और श्लोक 1, और सभी पांडुलिपियों को देखता है, उनमें कुछ अंतर हैं। वह जो प्रश्न पूछने का प्रयास कर रहा है वह यह है कि इनमें से कौन सा अंतर संभवतः मार्क द्वारा लिखी गई बातों को दर्शाता है? और फिर, मैं यह धारणा नहीं छोड़ना चाहता कि प्रत्येक श्लोक में कई अंतर हैं।

कभी-कभी केवल एक जोड़े होते हैं, कभी-कभी एक से अधिक होते हैं, कभी-कभी वे होते हैं, यह बहुत स्पष्ट है, अन्य समय में इसे निर्धारित करना थोड़ा अधिक कठिन होता है। लेकिन यदि कोई लेखक किसी पद्य के साथ काम कर रहा है, और सभी पांडुलिपियों में से कुछ भिन्नताएं हैं, कुछ अंतर हैं, तो लेखक, पाठ समीक्षक जानना चाहता है कि उनमें से सबसे अधिक संभावना कौन सी है जिसे मार्क ने लिखा है। तो सिद्धांतों में से एक यह है कि उन सभी मतभेदों में से, सबसे कठिन या सबसे कठिन पढ़ना संभवतः सबसे सही है।

और इसका कारण यह है कि एक मुंशी द्वारा सुधार लाने की संभावना अधिक होती है। लेखक द्वारा पाठ में कठिनाई लाने की तुलना में पाठ को सुचारू करने, सामंजस्य स्थापित करने, सुधारने की अधिक संभावना होती है। और फिर, ये सिर्फ सिद्धांत हैं, वे हमेशा काम नहीं करते हैं, क्योंकि एक लेखक गलती कर सकता है, संभवतः दृष्टि में त्रुटि के कारण, या, एक पंक्ति को छोड़ देने के



कारण, एक लेखक ऐसा कर सकता है, एक लेखक ऐसा कर सकता है। पाठ अधिक कठिन है, और उस स्थिति में सबसे कठिन पाठन सही नहीं हो सकता है।

लेकिन आम तौर पर, एक लेखक द्वारा पाठ में सुधार करने की अधिक संभावना होती है, ताकि वह पाठ में विसंगतियों, धार्मिक समस्याओं या खुरदरेपन को दूर कर सके। मुंशी इसे और अधिक सहज बनाने की प्रवृत्ति रखेगा। तो उस आधार पर, अधिकांश पाठ समीक्षक सोचते हैं, बाकी सब समान होने पर, सभी पाठन जितना अधिक कठिन होगा, पाठन उतना ही कठिन होगा, संभवतः सही होगा।

दूसरा सबसे छोटा वाचन है। दूसरा सामान्य सिद्धांत यह है कि सबसे छोटा पाठन संभवतः सही होगा। तो सभी प्रकारों और अंतरों में से, जो सबसे छोटा होगा वह संभवतः सही होगा।

और फिर, इसके लिए तर्क यह है कि, एक लेखक द्वारा पाठ का विस्तार करने, उसे सुचारू करने और उसमें सुधार करने तथा उसमें कुछ जोड़ने की अधिक संभावना होती है। हालाँकि फिर भी, कुछ अपवाद हैं। हमने देखा कि एक लेखक किसी पाठ की प्रतिलिपि बनाने में गलती से एक पंक्ति छोड़ सकता है, जिससे एक छोटा पाठ तैयार हो जाता है।

तो यह है, ये कठिन और तेज़ नियम नहीं हैं। ऐसे सिद्धांत हैं जिनका आमतौर पर पालन किया जाता है। बाकी सब कुछ समान होने पर, कम पढ़ना सही होगा, क्योंकि एक लेखक के विस्तार, विस्तृत और सुचारु होने की संभावना अधिक होती है।

तीसरी बात, जिसका आमतौर पर पालन किया जाता है, वह यह है कि जब आपके पास अलग-अलग पाठों वाली पांडुलिपियां हों, तो जो पाठन दूसरों की उत्पत्ति को सबसे अच्छी तरह से समझा सकता है, वह संभवतः सही होगा। यदि आप उनमें से किसी एक के आधार पर अन्य सभी रीडिंग की उत्पत्ति की व्याख्या कर सकते हैं, तो संभवतः यह सही रीडिंग है। एक उदाहरण के लिए, कई बार आप ऐसा पाते हैं कि कभी-कभी यदि किसी लेखक के पास एक से अधिक

पांडुलिपियाँ होती हैं, या वह एक से अधिक पढ़ने के बारे में जानता है, तो सबसे आसान तरीका उन सभी को संयोजित करना हो सकता है।

और इसलिए आपके पास अक्सर, कभी-कभी आपके पास ऐसी पांडुलिपियां होंगी जिनमें कई पाठ होंगे, क्योंकि लेखक के पास कई पाठ हो सकते हैं, या वह एक से अधिक पाठों के बारे में जानता होगा, यह पता लगाने की कोशिश करने के बजाय कि कौन सा सही था, हम मैं बस उन सभी को वहां रखूंगा और उन सभी को एक साथ जोड़ दूंगा। और इसलिए यह वर्णन करने का एक तरीका है कि इनमें से कुछ पाठन अन्य पांडुलिपियों में से किसी एक द्वारा कैसे उत्पन्न हो सकते हैं। इसलिए यदि आप सभी प्रकारों की व्याख्या कर सकते हैं, यदि आप उनमें से किसी एक के आधार पर उन सभी की व्याख्या कर सकते हैं, कि यदि कोई अन्य रीडिंग को जन्म देता प्रतीत होता है, तो संभवतः यह सही है।

तो ये कुछ सिद्धांत हैं जिनका उपयोग पाठ समीक्षक यह निर्धारित करने में करते हैं कि किसी पाठ को पढ़ने की सबसे अधिक संभावना क्या थी। अब, मैं आपको नए नियम से कुछ संक्षिप्त उदाहरण देता हूँ। उनमें से एक का उल्लेख हम पहले ही कर चुके हैं, और फिर, इनमें से अधिकांश केवल शब्दों के अंतर हैं।

फिर से, मैं नहीं चाहता कि आप सोचें, आपको यह धारणा छोड़नी चाहिए कि यदि आपके पास मार्क पर एक पांडुलिपि है, और अन्य सभी पांडुलिपियां लगभग हर पहलू में इससे भिन्न होंगी। पूरी पांडुलिपि अलग है। और यह अक्सर यहां और वहां शब्दों में अंतर होता है, और लेकिन हम देखेंगे कि कभी-कभी अंतर अधिक महत्वपूर्ण होता है।

एक उदाहरण, एक बहुत ही आसान जिसका हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं, ल्यूक अध्याय 1 और 1 से 4 तक आता है, ल्यूक की प्रस्तावना, जहां ल्यूक कहता है, मुझे अपना खुद का लिखना या जीवन का अपना विवरण तैयार करना अच्छा लगा। मसीह, ताकि तू, थियोफिलस, इन बातों की निश्चितता को जान सके। बाद की कुछ पांडुलिपियाँ हैं जिनमें शब्दों को जोड़ा गया है, जब ल्यूक कहते हैं, यह मुझे अच्छा लगा, उन्होंने शब्दों को और पवित्र आत्मा को जोड़ा। दिलचस्प

बात यह है कि केवल कुछ ही पांडुलिपियाँ हैं जो ऐसा करती हैं, उन सभी पांडुलिपियों में से जिनमें शब्द और पवित्र आत्मा शामिल नहीं हैं।

हम शब्दों को देखते हैं, और यह पवित्र आत्मा को अच्छा लगता है, अधिनियमों में कहीं और। तो सबसे अधिक संभावना है, क्योंकि ये दो बाद की पांडुलिपियाँ हैं, और कोई भी नहीं है, कोई अन्य पांडुलिपियाँ नहीं हैं जो इसे प्रमाणित करती हैं, और क्योंकि अधिनियमों में इस वाक्यांश को कहीं और शामिल किया गया है, और क्योंकि ऐसा लगता है कि संभवतः ल्यूक जो कहता है उसे प्रतिबिंबित करने के लिए शास्त्रियों का प्रयास है कहीं और, और शायद पाठ में दैवीय स्वीकृति भी जोड़ दें। दूसरे शब्दों में, यह सिर्फ ल्यूक का काम नहीं है, इसमें शायद पवित्र आत्मा की मंजूरी होनी चाहिए, ल्यूक ने ये शब्द नहीं लिखे।

ल्यूक ने बस इतना लिखा, मुझे इन्हें तैयार करना, यह खाता तैयार करना अच्छा लगा। एक और दिलचस्प उदाहरण प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 और श्लोक 3 है, जो जॉन के न्यू जेरूसलम दर्शन में, जॉन अब वास्तव में पुराने नियम के वाचा सूत्र को उद्धृत कर रहा है। और अध्याय 21, प्रकाशितवाक्य के पद 3 में कहता है, और मैं ने सिंहासन में से एक ऊंचे शब्द को यह कहते हुए सुना, कि परमेश्वर का निवास मनुष्यों वा मनुष्योंके बीच में है, और वह उनके साथ रहेगा।

वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर स्वयं उनके साथ रहेगा, और उनका परमेश्वर होगा। यदि आप अपने कुछ पुराने नियम को याद करते हैं, तो आप देखेंगे कि यह एक अनुबंध सूत्र है जो पूरे पुराने नियम में विभिन्न रूपों में बार-बार सामने आता है। मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, वे मेरी प्रजा ठहरेंगे।

ऐसा प्रतीत होता है कि जॉन विशेष रूप से यहजेकेल 37 के संस्करण को चित्रित कर रहा है, हालाँकि यह यिर्मयाह, जकर्याह और कई पुराने नियम के ग्रंथों में पाया जाता है। लैव्यव्यवस्था अध्याय 26, वाचा सूत्र की पूर्ण अभिव्यक्ति। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि प्रकाशितवाक्य 21, श्लोक 3 के लिए दो प्रकार की पांडुलिपियाँ हैं। उस खंड में जहां यह कहा गया है, वे उसके लोग होंगे, और भगवान स्वयं उनके साथ रहेंगे।

कुछ पांडुलिपियों में एकवचन लोग हैं, जबकि अन्य पांडुलिपियों में बहुवचन लोग हैं, या हम कह सकते हैं कि एक प्रकार के अंग्रेजी लोग हैं। हम इसका बहुत अधिक उपयोग नहीं करते हैं, लेकिन प्रकाशितवाक्य 21, श्लोक 3 पर कुछ पांडुलिपियों में लिखा है, वे मेरे लोग होंगे, एकवचन। दूसरों के पास है, वे मेरे लोग होंगे, बहुवचन।

और सवाल यह है कि फिर सही रीडिंग कौन सी है? जॉन ने संभवतः क्या लिखा? जब आप स्वयं पांडुलिपियों को देखते हैं, बाहरी साक्ष्य की तरह, जहां तक पांडुलिपियों की तारीख और संख्या और बीजान्टिन और अलेक्जेंड्रिया आदि की बात है, तो एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचना बहुत मुश्किल है। ताकि अन्य प्रकार के साक्ष्यों को आम तौर पर ध्यान में रखा जा सके। उदाहरण के लिए, क्या यह अधिक संभावना है कि एक मुंशी लोगों को बहुवचन लिखेगा, या क्या यह अधिक संभावना है कि एक मुंशी लोगों को एकवचन लिखेगा? और साक्ष्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा यह दिलचस्प है कि जॉन अक्सर पुराने नियम के ग्रंथों को सार्वभौमिक बनाता है।

पुराने नियम के ग्रंथ जो विशेष रूप से इज़राइल राष्ट्र को संदर्भित करते हैं। अब जॉन आम तौर पर लोगों को जवाब देना शुरू कर देता है, जिनमें गैर-यहूदी भी शामिल हैं। और जॉन ने उस वाक्यांश को पूरे प्रकाशितवाक्य में बार-बार दोहराया है, हर जनजाति और भाषा और भाषा, आदि और राष्ट्र के लोग।

तो, क्या यह संभव है कि जॉन ने स्वयं पुराने नियम के उस फॉर्मूले को बदल दिया जिसमें एकवचन लोग इज़राइल को संदर्भित करते थे, और अब उसने जानबूझकर इसे बहुवचन, लोग बना दिया, यह स्पष्ट करने के लिए कि सभी लोग, न केवल इज़राइल, बल्कि अन्यजाति, हर धर्म के लोग जनजाति और भाषा और भाषा और राष्ट्र, अब बहुवचन, परमेश्वर के लोगों के हैं। और हो सकता है कि एक शास्त्री के पास पुराने नियम के वाचा सूत्र को जानने वाला एक शास्त्री होगा जो एकवचन लोगों में है, हो सकता है कि उसने इसे वापस बदलने की कोशिश की हो ताकि यह ईजेकील और लैव्यिकस 26 से पुराने नियम के वाचा सूत्र के अनुरूप हो सके जिसमें एकवचन था लोग। तो यहां एक उदाहरण है जहां संभवतया, संभवतः जॉन ने मूल रूप से लोगों का बहुवचन

लिखा था, और बाद में किसी लेखक ने इसे पुराने नियम के फॉर्मूले की तरह बनाने के लिए इसे वापस एकवचन में बदल दिया होगा।

एक और उदाहरण, दिलचस्प उदाहरण, रोमियों अध्याय 5 और पद 1 में पाया जाता है। रोमियों अध्याय 5 और पद 1 में, पॉल ने विश्वास द्वारा औचित्य के निहितार्थों के परिणामों को प्रदर्शित करके एक नया खंड शुरू किया है जिसके लिए उसने पहले चार में तर्क दिया है। अध्याय. तो इस तथ्य के आधार पर कि कोई व्यक्ति यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाता है, पद 5 से शुरू करके, इसलिए, चूंकि हम धर्मी ठहराए गए हैं, अध्याय 1 से 4, विश्वास के माध्यम से, हमारी ईश्वर के साथ शांति है। अब यह इस बात का बयान प्रतीत होता है कि क्या सत्य है और न्यायोचित होने के कारण हमारे पास वास्तव में क्या है।

हमें विश्वास के द्वारा उचित ठहराया गया है, इसलिए, वर्तमान में, हम वर्तमान में भगवान के साथ शांति रखते हैं। हम अब ईश्वर से शत्रुता में नहीं हैं। अब हम शत्रुतापूर्ण रिश्ते में नहीं हैं और अब हमारे बीच शांतिपूर्ण संबंध हैं।

हालाँकि, कुछ पांडुलिपियों में, दिलचस्प बात यह है कि यहाँ एक शब्द है जिसका अनुवाद किया जा सकता है हमें या हमें ईश्वर के साथ शांति रखनी चाहिए। एक उपदेश या आदेश से अधिक। तो यह कौन सा है? पुनः, कुछ पांडुलिपियों में लिखा है, ईश्वर के साथ हमारी शांति है, एक सांकेतिक कथन, एक दावा।

कुछ अन्य पांडुलिपियों में कहा गया है, हमें शांति रखनी चाहिए या रहने देनी चाहिए या हमें ईश्वर के साथ शांति रखनी चाहिए। एक उपदेश या आदेश से अधिक। और इससे थोड़ा फर्क पड़ता है।

पॉल ने कौन सा लिखा? क्या पॉल हमें शांति रखने का आदेश दे रहा था या हमें शांति रखनी चाहिए, या वह बस एक दावा कर रहा था? यह वास्तव में सत्य है, इस तथ्य पर आधारित है कि हमें उचित ठहराया गया है। अंतर, अंतर ग्रीक में एक अक्षर है। यह वही शब्द है जो हमारे पास

है, यह वही है, या यह वही शब्द है जिसे हम रखना चाहते हैं या जिसका हम अंग्रेजी में अनुवाद करते हैं।

लेकिन अंतर यह है, क्या यह, क्या इस शब्द का अनुवाद किया जाना है, हमारे पास एक दावे, एक बयान के रूप में है, जिसे एक तरह से लिखा जाएगा। या यह एक आदेश है? हमें होना चाहिए, हमें रखने दो, इसे दूसरे तरीके से लिखा जाएगा। अंतर एक अक्षर का है जो हो सकता था, उसका उच्चारण एक जैसा हो सकता था।

याद रखें हमने कहा था कि यदि कोई लेखक वहां बैठा हुआ पाठ सुन रहा है, कभी-कभी जब किसी अक्षर का उच्चारण उसी तरह किया जाता है, तो वह क्या लिखने जा रहा है? और यह एक उदाहरण है जहां क्रिया को केवल एक अक्षर के परिवर्तन के साथ लिखा जा सकता था, और दोनों अक्षरों का उच्चारण समान होता। हर कोई उसे देखता है? यदि लेखक, ग्रीक शब्दों का उपयोग करता है, तो उनमें से एक एकोमेन होगा, जो कि हमारे पास होगा, दूसरा एकोमेन होगा। आप देखिये सिर्फ एक अक्षर का अंतर है।

एकोमेन यह होगा कि हमें होना चाहिए या हमें रखने देना चाहिए, एकोमेन के विपरीत, जो कि हमारे पास है, एक दावा है। समस्या यह थी कि आह और ओह का उच्चारण एक ही था, ओह। तो यदि आपके पास कोई पढ़ रहा है और कहता है, मैं क्या लिखने जा रहा हूँ? क्या मैं लिखने जा रहा हूँ कि हमारे पास है या हमें लिखना चाहिए, या क्या मैं लिखने जा रहा हूँ हमारे पास है, एक कथन या दावा? अधिकांश, अधिकांश टिप्पणियाँ और रोमन जो मैंने पढ़े हैं, वे सभी इस बात से आश्चस्त हैं कि हमारे पास जो अनुवाद है, वह एक दावा या कथन है, सबसे अधिक संभावना है कि वह सही है।

लेकिन आप अभी भी देख सकते हैं कि पाठ समीक्षकों को क्या करना पड़ता है जब उनके पास रोमन 5.1 जैसी पांडुलिपियाँ होती हैं जिनमें केवल एक अक्षर का अंतर होता है, जो शायद इस तथ्य पर वापस जाता है कि दोनों अक्षरों का उच्चारण समान होता, और कुछ लेखकों को ऐसा करना पड़ता। एक पत्र लिखें या दूसरे पत्र लिखें जिसके परिणामस्वरूप पाठ की व्याख्या थोड़े

अलग तरीके से होगी। जहां तक लंबाई की बात है तो अंतिम उदाहरण कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। इनमें से अधिकांश जिन्हें हमने अब तक देखा है, उदाहरण के लिए, ल्यूक 1 केवल कुछ शब्द थे।

अन्य दो केवल वर्तनी थे, वस्तुतः दोनों अन्य दो केवल एक अक्षर के बीच के अंतर के उदाहरण थे। लेकिन मैं एक को संक्षेप में देखना चाहता हूं जो थोड़ा अधिक लंबा है, और वह मार्क अध्याय 16 का अंत है। और फिर, मैं नहीं करता, मैं इसे हल करने की आशा नहीं करता, और मैं इसे हल करने की आशा नहीं करता ऐसा क्यों हुआ या हमें पाठ के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, इसके बारे में विस्तार से बताएं।

लेकिन अधिकांश अंग्रेजी में भी, यह इतना महत्वपूर्ण है कि मैंने अब तक जितने भी अंग्रेजी अनुवाद देखे हैं उनमें इसका उल्लेख शामिल है। और वह यह है कि यदि आप अधिकांश अंग्रेजी पांडुलिपियों को देखें, तो उनमें इस तरह का एक नोट होगा। मैं एक एनआईवी पाठ देख रहा हूं, और यह कहता है कि प्रारंभिक पांडुलिपियों और कुछ अन्य प्राचीन गवाहों में मार्क 16 श्लोक 9 से 20 तक नहीं हैं।

इसलिए यदि आप अपनी अधिकांश बाइबिलों को देखें, तो मार्क 16, मार्क का अंतिम अध्याय, श्लोक के अंत तक जाता है, श्लोक 20 तक जाता है। लेकिन मैंने जो भी अंग्रेजी अनुवाद देखा है, उसमें कुछ छोटे नोट हैं पाठ, या शायद एक फुटनोट में जो कहता है कि कुछ प्रारंभिक पांडुलिपियों और अन्य गवाहों में छंद 9 से 16 नहीं हैं। और वास्तव में एक और था, कुछ अंग्रेजी बाइबिल का एक और संभावित अंत भी है जो बहुत छोटा है, और उनके पास एक समान होगा टिप्पणी।

ये छंद, या यह अंत, कभी-कभी वे इसे एक फुटनोट में रखेंगे, और फिर से वे कहेंगे कि यह पहले या प्राचीन गवाहों में से कुछ में नहीं था। तो समस्या यह है कि, हमारे पास जाहिर तौर पर मार्क के दो संस्करण हैं। एक संस्करण में मार्क अध्याय 16 है जो केवल श्लोक 8 तक जाता है। मार्क के दूसरे संस्करण में इसका अंत है, जैसे श्लोक 9 से 20 तक।

और मैं इसे पढ़ने के लिए समय नहीं लेने जा रहा हूँ, लेकिन मार्क 16 की कविता 9 शुरू होती है, जब यीशु सप्ताह के पहले दिन जल्दी उठे, तो उन्होंने मैरी मैग्डलीन को दर्शन दिए, जिनमें से उन्होंने सात राक्षसों को निकाला था। उसने जाकर उन लोगों को बताया जो उसके साथ थे। और फिर यह आगे बढ़ता है, और वास्तव में श्लोक 15 में, इसमें यीशु अपने शिष्यों से कह रहे हैं, दुनिया में जाओ और इस सुसमाचार का प्रचार करो, सारी सृष्टि को यह खुशखबरी, आदि, आदि।

तो आपके पास यह लंबा अंत है कि, फिर से, मेरी अंग्रेजी बाइबिल कहती है कि कुछ पांडुलिपियों में यह अंत नहीं है, श्लोक 9 से 20। तो सवाल यह है कि मार्क का अंत कहां हुआ? क्या मरकुस पद 8 पर समाप्त हुआ? यह, बहुत सारी पांडुलिपियों की तरह, मार्क का अंत पद 8 पर है। बस इतना ही। यह सुसमाचार का अंत है।

अन्य पांडुलिपियों में छंद 9 से 20 तक शामिल हैं। तो मार्क का अंत कहां हुआ? फिर, मैं इस समस्या को हल नहीं करना चाहता और इस पर सभी विवरणों में नहीं जाना चाहता, लेकिन क्या यह संभव है, क्या यह संभव है कि मार्क वास्तव में श्लोक 8 पर समाप्त करने का इरादा रखता था? और मैं इसे पढ़ूंगा. यहां बताया गया है कि मार्क 16 कैसे समाप्त होता है।

यह अध्याय 16 यीशु के पुनरुत्थान और उनके कुछ शिष्यों के सामने प्रकट होने का विवरण है। और श्लोक 8 कहता है, स्त्रियाँ कांपती और घबराई हुई निकलीं और कब्र से भाग गईं। उन्होंने डर के कारण किसी से कुछ नहीं कहा।

और यह श्लोक 8 में अध्याय 16 का अंत है। और आप में से कुछ लोग आश्चर्यचकित हो सकते हैं, कि सुसमाचार को समाप्त करने का यह किस प्रकार का तरीका है? महिलाएं कांपती, डरती और किसी को बताने से डरती हैं? सुसमाचार का अंत इस तरह नहीं होता, खासकर जब आप मैथ्यू और ल्यूक और जॉन को पढ़ते हैं। सुसमाचार का अंत ऐसे नहीं होता। लेकिन शायद एक प्राचीन शास्त्री ने ऐसा ही सोचा था।



और शायद छंद 9 से 20 तक कुछ प्राचीन शास्त्रियों द्वारा सुसमाचार के लिए उचित अंत का निर्माण करने का प्रयास किया गया था। और फिर कई पांडुलिपियों को उठाया गया और उनमें छंद 9 से 20 तक शामिल थे। लेकिन क्या यह संभव है कि मार्क वास्तव में छंद 8 पर समाप्त हो गया? और मुझे लगता है कि अच्छे कारण हैं, यहां तक कि मार्क के साथ धार्मिक कारण और प्रासंगिक कारण भी हैं जो सुझाव देते हैं कि यह यहीं समाप्त हो सकता है।

कुछ लोगों का सुझाव है कि वास्तव में श्लोक 8, मार्क ने स्वयं श्लोक 8 के बाद और अधिक लिखा और किसी तरह वह खो गया, पांडुलिपि या कुछ और काट दिया गया या जला दिया गया। किसी तरह वह लुप्त हो गया और बाद में लेखक ने छंद 8, 9 से 20 तक शामिल कर लिया। लेकिन क्या यह संभव है कि मार्क का इरादा छंद 8 पर समाप्त करने का था? फिर, हम इस पर विचार नहीं करेंगे कि ऐसा क्यों हो सकता है।

लेकिन शायद तब एक मुंशी के पास एक पांडुलिपि थी जहां मार्क 16, 8 पर समाप्त होता है, उसने सोचा कि यह सुसमाचार को समाप्त करने का एक अपर्याप्त तरीका था और वह मैथ्यू और ल्यूक और शायद जॉन के बारे में भी जानता था। और इसलिए वास्तव में, 9 से 20 तक के इन छंदों में से कुछ मिलते-जुलते हैं, विशेष रूप से 15 और 16, मैथ्यू अध्याय 28, महान आयोग पाठ से बहुत मिलते-जुलते हैं। तो शायद एक मुंशी ने सोचा कि उसे मार्क के सुसमाचार में एक उचित अंत जोड़ने की जरूरत है।

और इसलिए छंद 9 से 20 कुछ पांडुलिपियों पर दिखाई देते हैं लेकिन हो सकता है कि यह मूल अंत न हो जो मार्क ने स्वयं लिखा हो। तो निष्कर्ष में, पाठ्य आलोचना, पाठ्य आलोचना का अर्थ बाहरी और आंतरिक, सभी संभावित साक्ष्यों को ध्यान में रखना है। बाह्य रूप से, पांडुलिपियों की तारीख, वे किस परिवार से संबंधित हैं, पांडुलिपि का वितरण, क्या कोई निश्चित पांडुलिपि स्थित है या उसकी उत्पत्ति केवल एक ही स्थान पर हुई है, या क्या कोई पाठ भौगोलिक रूप से कई स्थानों पर फैला हुआ प्रतीत होता है और अधिक प्रसिद्ध था।

पांडुलिपि की तारीख, लिपिबद्ध प्रवृत्तियों को देखते हुए, और फिर आंतरिक रूप से लेखक की शैली, शब्दावली, व्याकरण, पुस्तक में कहीं और देखें, या यदि लेखक ने पॉल जैसे अन्य दस्तावेज़ लिखे हैं, तो उसके धर्मशास्त्र और शैली को देखते हुए, व्यापक संदर्भ, उस सारी जानकारी का उपयोग करना और सभी पांडुलिपि साक्ष्यों से पीछे की ओर काम करके यथासंभव बारीकी से और यथासंभव सटीकता से पुनर्निर्माण करने का प्रयास करना, उन सभी मानदंडों और सूचनाओं का उपयोग करना, जो सबसे अधिक संभावना थी, उसे यथासंभव सटीक और बारीकी से पुनर्निर्माण करने के लिए पीछे की ओर काम करना मार्क या मैथ्यू या रोमन्स या यिर्मयाह या यशायाह या जेनेसिस के लेखक, उन्होंने सबसे अधिक संभावना क्या लिखी है? याद रखें, एक पेड़ की तरह जहां एक तना कई दिशाओं में निकलता है, हमारे पास तना नहीं है, हमारे पास मूल पांडुलिपि नहीं है, हमारे पास सिर्फ शाखाएं हैं और आमतौर पर शाखाओं के सिरे होते हैं। इसलिए हम पीछे की ओर काम करने की कोशिश करते हैं और सभी पांडुलिपियों में से मूल पांडुलिपि को पढ़ने की सबसे अधिक संभावना है, फिर से, प्रतिलिपि बनाने की प्रक्रिया में, मतभेद आते हैं, परिवर्तन आते हैं, और पाठ आलोचना साक्ष्य से वापस काम करने की कोशिश करती है। मूल पाठन की सबसे अधिक संभावना क्या थी, उसका पुनर्निर्माण करें। लेकिन फिर से, मैं जोड़ना चाहता हूं, यह कहा जाना चाहिए कि मेरी राय में, कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है, और अधिकांश इंजील विद्वानों ने इसकी पुष्टि की है, यीशु मसीह में हमारे विश्वास के लिए कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है जो पाठ-महत्वपूर्ण मतभेदों पर निर्भर करता है।

पाठ आलोचना की प्रक्रिया हमें संभाव्यता के बहुत उच्च स्तर पर पहुंचने की अनुमति देती है, और हम हर दिन संभाव्यता के उच्च स्तर के साथ काम करते हैं, लेकिन हमें संभावना के बहुत उच्च स्तर पर पुनर्निर्माण करने की अनुमति देता है कि बाइबिल में सबसे अधिक संभावना क्या थी। लेखक मूलतः लिखते हैं। जब आप हमारे पास मौजूद सभी पांडुलिपियों और साक्ष्यों को देखते हैं, तो पाठ आलोचना हमें उस पर काम करने और उच्च स्तर की संभावना के साथ पुनर्निर्माण करने की अनुमति देती है जो लेखक ने लिखा था, ताकि हम उस पाठ पर विश्वास कर सकें जो हमारे पास है, कि हम कुछ ऐसा हो जो व्याख्या का एक सटीक उद्देश्य हो जो कि ईश्वर के वचन के रूप में बाइबल की व्याख्यात्मक सोच और प्रतिबिंब और व्याख्या और अनुप्रयोग के

लिए आधार प्रदान करता हो। तो यह संचरण की प्रक्रिया का पहला चरण है जो हमें हेर्मेनेयुटिक्स पर अधिक विस्तार से चर्चा करने के लिए प्रेरित करेगा।

बाइबिल पाठ की प्रेरणा, मूल उत्पादन और उत्पत्ति से लेकर सभी सबूतों के माध्यम से संचरण की प्रक्रिया, जैसे कि पाठ की प्रतिलिपि बनाई गई और उपलब्ध कराई गई, पाठ की आलोचना के माध्यम से पुराने नए नियम के लिए एक पाठ का पुनर्निर्माण और पुनर्निर्माण किया गया जो एक सटीक प्रतिबिंब है मूल प्रेरित पाठ का. यह अब हमें प्रसारण के दूसरे, दूसरे चरण की ओर ले जाता है, और यह पुराने नए नियम के पाठ के पुनर्निर्माण पर आधारित है, अब ग्रीक और हिब्रू में अनुवाद, अनुवाद तब उस पाठ को विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध कराने की अनुमति देता है हम बात करते हैं, ताकि अब हमारे पास व्याख्याशास्त्र और व्याख्या के लिए पर्याप्त आधार हो। तो हमारे अगले सत्र में हम अनुवाद के बारे में थोड़ी बात करेंगे, अनुवाद की प्रक्रिया, एक अच्छा अनुवाद क्या होता है, अनुवाद के विभिन्न प्रकार क्या हैं, और व्याख्याशास्त्र और व्याख्या में अनुवाद क्या भूमिका निभाता है, शायद आपको कौन सा अनुवाद करना चाहिए अपने स्वयं के व्याख्यात्मक प्रयासों में उपयोग करें।